**SHODH SAMAGAM**

**Online ISSN : 2581-6918**

शोध समागम®

# क्रियात्मक अनुसंधान : ग्रामीण क्षेत्र के असाक्षर महिलाओं को साक्षर बनाने हेतु उनके आत्मविश्वास को सुनिश्चित करना

डॉ. कामिनी बावनकर, जिला समन्वयक
जिला लोक शिक्षा समिति, रायपुर छत्तीसगढ़

**ORIGINAL ARTICAL**

Corresponding Autor :
डॉ. कामिनी बावनकर,
जिला समन्वयक
जिला लोक शिक्षा समिति, रायपुर (छ.ग.)

shodhsamagam1@gmail.com

Received on : 28/01/2019
Revised on : -----
Accepted on : 29/01/2019
Plagiarism : 04% on 29/01/2019

## प्रस्तावना :–

हमारे समाज में शायद ही कोई व्यक्ति ऐसा होगा जो अपने जीवन को बेहतर नहीं बनाना चाहता। ऐसा कौन सा व्यक्ति है, जो स्वयं के साथ होने वाले अन्याय का विरोध नहीं करना चाहता हमारा यह सोचना है कि साक्षरता जीवन को बेहतर बनाने के प्रयासों का प्रस्थान बिन्दु है। हमारे देश के पास सबसे बड़ी निरक्षर आबादी है। 2011 की जनगणना के अनुसार पुरूषों की साक्षरता 82.14 प्रतिशत और 65.46 प्रतिशत महिलाओं की साक्षरता है। कम महिला साक्षरता भी लिखने पढ़ने की गतिविधियों के लिए पुरूषों पर निर्भर रहने के लिए जिम्मेदार है। इस प्रकार यह निरक्षरता एक दुश्चक्र का रूप ले लिया है।

देश में शिक्षा के अधिकार को सुनिश्चित करने के लिए बहुत सी योजनाओं को भी लागू किया गया। 1986 में राष्ट्रीय शिक्षा की योजना को घोषित किया गया जिसने पूरे देश में विशेश रूप से युवा आबादी के बीच निरक्षरता की समस्या को पूरे करने के लिए प्रतिबद्ध होना चाहिए, किन्तु क्या हमने उस लक्ष्य को पा लिया ?

देश को निरक्षरता के अंधेरे से मुक्ति दिलाने का सपना संजोया गया है इसकी भरपाई कुछ हद तक पूरी हो सकेगी यदि

हमारे देश की महिलाएं साक्षर हो विशेषतः ग्रामीण महिलाएं अपने जीवन की धार बदले, अत्याचार के विरूद्ध आवाज उठाये, पढ़–लिख कर तरक्की करे, विकास की शासकीय योजनाओं का लाभ उठाये, उसमें अपनी भागीदारी सुनिश्चित करे और एक सुंदर समाज की रचना के लिए कदम उठाये।

यहां यह कहावत चरितार्थ होती है :–

**''नारी पढ़ेगी, विकास गढ़ेगी''**

अतः महिलाओं को साक्षर बनाना देश की विकास की ओर कदम बढ़ाना होगा।

## आवश्यकता :–

निम्न स्तरीय साक्षरता का नकरात्मक असर सिर्फ महिलाओं के जीवन स्तर पर ही नहीं अपितु उनके परिवार एवं देश के आर्थिक विकास पर भी पड़ा है।

साक्षरता के संकुचित अर्थ जैसे की अपना नाम, पता लिख–पढ़ लेने मात्र से उबरना होगा। सही मायने में साक्षरता व्यक्ति में पढ़ने–लिखने व तार्किक क्षमता का विकास करना ताकि व्यक्ति अपने जीवन को संर्वागीण संदर्भ में देखते हुए खुद में व्यक्तिगत परिवर्तन, सकारात्मक चिंतन विकसित करते हुए अपने विचारों को स्वनियंत्रित करते हुए जीवन को सही आकार देने से है। आत्मविश्वास में वृद्धि करने से है।

असाक्षर महिलाओं को साक्षर बनाना तथा उनमें अपने अस्तित्व के प्रति नई चेतना जागृत करना। नई चेतना उन असाक्षरों के लिए जिन्होंने शिक्षा के अभाव में कभी अपने अधिकारों को जानने और समझने की कोशिश नहीं की तथा जीवन भर दूसरों की बेगारी करना ही अपनी नियति समझा। साक्षर होकर व्यकित्व अपने अधिकारों, कर्तव्यों और देश के विकास में अपनी भूमिका निभा सकेगा। साथ ही अपने पर्यावरण को समझने, वैज्ञानिक दृष्टिकोण अपनाने और समाज को सही दिशा–निर्देश देने की क्षमता विकसित होगी। निरक्षरता के कारण भय और अविश्वास की जगह साक्षरों के चेहरों पर एक नया साहस और आत्मविश्वास झलकता दिखाई देने लगेगा व निरक्षरता के अंधेरे से मुक्ति का सपना सच होता दिखाई देगा। क्योकि साक्षर व्यक्ति आत्मविश्वास से परिपूर्ण आशावादी होता है। लक्ष्य को प्राप्त करने वाली देरी, बाधाएं एवं असफलता भी उन्हें विचलित नहीं करती।

**केन्द्र बिन्दु** :– प्रस्तुत अध्ययन में शोध का केन्द्र बिन्दु है–

अभनपुर विकासखण्ड के असाक्षर महिलाओं को साक्षर बनाने हेतु उनके आत्म–विश्वास को सुनिश्चित करना।

## उद्देश्य :–

निरक्षरता मानव जीवन में एक अभिशाप है। इस अभिशाप को दूर करने की कोई उम्र की समय सीमा नहीं होती हर व्यक्ति को अपने जीवन में अक्षर ज्ञान प्राप्त करना होगा। अक्षर ज्ञान कोई अनुचित या शर्मनाक नहीं बल्कि जीवनपयोगी साधना है यदि इस बात को अच्छी

तरह समझाया जाये तो महिलाओं में संकोच व शर्म आत्मविश्वास में बदल जायेगी जिससे उनका यह आत्मविश्वास उन्हें शिक्षा प्राप्त करने की ओर उत्साहित करेगा। इस प्रकार असाक्षर महिलाओं में शिक्षा के प्रति अध्ययन के प्रति रूचि में वृद्धि करेगा।

## समस्या के संभावित कारण –

1. पढ़ने की कठिनाई का पहला स्तर जिसके कारण पढ़ने के प्रति आत्मविश्वास की कमी।
2. शिक्षा के प्रति नकारात्मक दृष्टिकोण की पढ़ लिखकर क्या होगा।
3. चौके चूल्हें की परिधि तक सीमित रहना
4. अत्यधिक उम्र के कारण पढ़ने में संकोच होना।

## परिकल्पना :–

1. अशिक्षित महिलाओ के लिये पठन–पाठन की गतिविधियों का आयोजन करवाया जायेगा।
2. गांव में घूम कर अशिक्षित महिलाओं से समूह चर्चा करवायी जायेगी।
3. अशिक्षित महिलाओं को सही उच्चारण के साथ बोलकर पढ़ाया जायेगा।
4. अशिक्षित महिलाओं में पढ़ने के प्रति रूचि उत्पन्न करने के लिए वातावरण निर्माण किया जायेगा।

## न्यादर्श का विवरण :–

प्रस्तुत क्रियात्मक शोध में रायपुर जिले के अतंर्गत अभनपुर विकासखंड के 15 असाक्षरो महिलाओं का चयन किया गया।

## उपकरण का विवरण :–

क्रियात्मक अनुसंधान में प्रस्तावित अध्ययन में शोध के उद्देष्य को ध्यान में रखते हुए लेखन कौशल प्रश्नावली के द्वारा एवं साक्षर होने के बाद आत्मविश्वास से संबंधी परीक्षण हेतु स्वनिर्मित प्रश्नावली के द्वारा आंकलनों का संकलन किया जायेगा।

**कार्य पद्धति** :– शोध की कार्य पद्धति निम्नानुसार है –

1. असाक्षर महिलाओं के घर–घर जाकर उनसे बात करके पढ़ने के लिये रूचि जागृति करने का प्रयास किया गया।
2. उच्चारण द्वारा बोलकर पढ़ाया गया एवं असाक्षरों को अनुकरण करने के लिए कहा गया। असाक्षरों को बोलकर लिखने को कहा गया। इस प्रकार की गतिविधिया बार–बार उनसे कराई गई, ताकि उनमें आत्मविश्वास हो सके।

आखरझांपी पढती हुई शिक्षार्थी

3. वातावरण निर्माण के लिये दिवारों पर नारे लिखवाये व गांव में रैली निकाली गयी।

## प्रदत्त संग्रह :–

प्रस्तुत शोध में असाक्षर महिलाओं को चिन्हाकिंत करने के लिए पूर्व परीक्षण लिया गया जिससे आंकड़े प्राप्त हुए इसके पश्चात् समस्या समाधान हेतु किये गये क्रियाकलाप एवं अध्यापन परीक्षण के माध्यम से आंकड़े संग्रहित किये गये।

**आंकड़ों का विश्लेषण** :– पूर्व एवं अंतिम परीक्षण में हुए सुधार की तुलनात्मक सारणी

| क्र. | असाक्षर महिलाओं के नाम | पूर्व परीक्षण प्राप्त अंक | प्रतिशत | मध्य परीक्षण प्राप्त अंक | प्रतिशत | अंतिम परीक्षण प्राप्त अंक | प्रतिशत |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 1 | दुलारी | 2 | 20 | 5 | 50 | 6 | 60 |
| 2 | गीता | 2 | 20 | 3 | 30 | 4 | 40 |
| 3 | कमला | 1 | 10 | 4 | 40 | 5 | 50 |
| 4 | पुश्पा | 1 | 10 | 3 | 30 | 4 | 40 |
| 5 | पार्वती | 1 | 10 | 4 | 40 | 5 | 50 |
| 6 | जमुना | 0 | 00 | 4 | 40 | 5 | 50 |
| 7 | मोहिनी | 0 | 00 | 3 | 30 | 5 | 50 |
| 8 | नीरा | 0 | 00 | 3 | 30 | 5 | 50 |
| 9 | उमा | 0 | 00 | 4 | 40 | 5 | 50 |
| 10 | गंगा | 1 | 10 | 5 | 50 | 6 | 60 |
| 11 | केकती | 1 | 10 | 4 | 40 | 5 | 50 |
| 12 | गोमती | 0 | 00 | 3 | 30 | 4 | 40 |
| 13 | मीना | 0 | 00 | 3 | 30 | 4 | 40 |
| 14 | भूरी | 1 | 10 | 3 | 30 | 4 | 40 |
| 15 | रूखमणी | 1 | 10 | 3 | 30 | 4 | 40 |
| योग | | 11 | 11 | 55 | 55 | 71 | 71 |

## व्याख्या एवं निष्कर्ष :–

**पूर्व परीक्षण** – असाक्षर महिलाओं को साक्षर बनाने हेतु आत्मविश्वास को ज्ञात करने के लिए 15 असाक्षर महिलाओं को चिन्हाकिंत किया गया, तत् पश्चात् जिनका प्राप्तांक 11 प्रतिशत प्राप्त हुआ।

**मध्य परीक्षण** – चिन्हांकित 15 असाक्षर महिलाओं का मध्य परिक्षण किया गया, असाक्षर महिलाओं के सुधार का प्राप्तांक 55 प्रतिशत प्राप्त हुआ।

**अंतिम परीक्षण** – उपरोक्त असाक्षरों का अंतिम परीक्षण किया गया जिसमें उनके आत्मविश्वास में अच्छा सुधार पाया गया जिसका प्राप्तांक – 71 प्रतिशत प्राप्त हुआ।

इस प्रकार की गतिविधियां प्रतिदिन 1 घंटे के अनुयार 200 घंटे करवाई गई। इन गतिविधियों के द्वारा 20 प्रतिशत से 60 प्रतिशत तक आत्मविश्वास से वृद्धि देखने को मिली 60 प्रतिशत वृद्धि प्राप्त करने वाले असाक्षर 2 एवं 50 प्रतिशत वृद्धि प्राप्त करने वाले असाक्षर 7 पाये गये।

**असाक्षर महिलाएं परीक्षा देते हुए**

पूर्व परीक्षण में जहां असाक्षरों में 11 प्रतिशत आत्मविश्वास में उपलब्धि पायी गयी वही मध्य परीक्षण में 55 प्रतिशत आत्मविश्वास में सुधार एवं अंतिम परीक्षण में 71 प्रतिशत तक की वृद्धि पायी गयी।

## मूल्यांकन –

1. सकारात्मक सोच कठिन से कठिन कार्य को सरल बना देता, निष्कर्ष के आधार पर शिक्षण कार्य करते समय असाक्षरों में विभिन्न गतिविधियां करानी चाहिये।
2. असाक्षर महिलाओं की रूचि, क्षमता एवं आवश्यकताओं को ध्यान में रखकर करना चाहिये। शिक्षक को स्वंय मित्रवत् व्यवहार करते हुए मार्गदर्शन देना चाहिए।

## निष्कर्ष :–

1. महिलाओं में खुद पढ़ने लिखने की रूचि जागृति हुई एवं लिखकर हिसाब करने से उनमें आत्मविश्वास पाया गया।

2. शिक्षा के द्वारा उनमें आत्मविश्वास एवं सम्मान की भावना का विकास हुआ हैं।
3. स्वास्थ एवं टीकाकरण के प्रति लगाव बढ़ रहा हैं जिसके परिणाम स्वरूप अपने बच्चे की देखरेख व समय पर टीकाकरण के प्रति लगाव बढा़ हैं।
4. परिवार नियोजन के प्रति विचारों में बदलाव आया है।
5. महिलाओं में सामाजिक एवं कानूनी अधिकारों के प्रति जागरूकता पायी गयी।

## संदर्भ ग्रंथ :–

1. शर्मा, डांगी एवं बंसल (2001) इन्होंने अपने अध्ययन में पाया कि संपूर्ण साक्षरता अभियान के प्रति लाभार्थियों में जबरदस्त सकारात्मक रवैया पाया गया।
2. बहुगुणा (2003) ने पाया कि, साक्षरता कार्यक्रम के जरिये लोगो के जीवनस्तर में प्रगति एवं बदलाव पाया गया।
3. shodhganga.inflibnet.ac.in
4. www.wsscc.org

*********